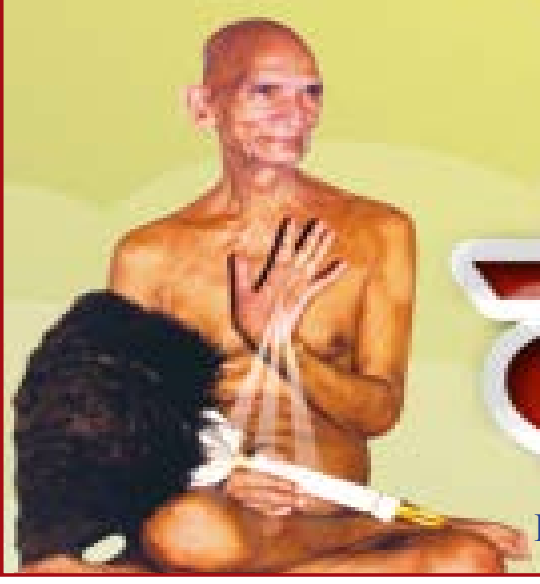

Issue: 154
09 Sept. 2020

जैनाचार

www.jainachar.com Daily

Editor: Mamta Anil Gandhi - Mumbai 9619160611 / 9323804751

d#.kkfufèk vkpk;l Jh foeylkxj th egkjkt vorj.k fnol ij Hkko Hkhuh fou;ktfy

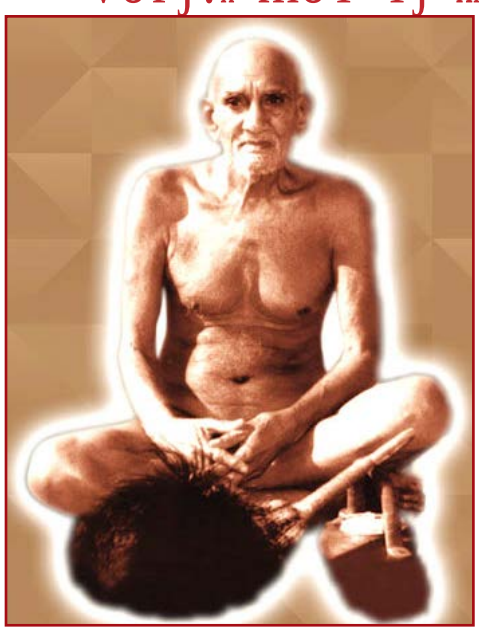

नाम विमल चारित्र विमल गुण गाए है,
हम विमल पदो के दास विमल विनयांजलि लाए है
विमल की महिमा न्यारी है,
यह तीन अक्षर का नाम तीन लोको पर भारी है

अनेक संतो ने इस धरा पर अवतरण लिया और स्व और परकल्याण कि भावना के साथ जगती का उद्धार किया। ऐसे ही महान संत हुए करुणा के भंड़ार आचार्य श्री विमल सागर जी महाराज उनके अवतरण दिवस पर उनका व्यक्तित्व पर एक नजर, भारत के उत्तर प्रदेश एटा जनपद के अन्तर्गत जलेसर कस्बे के कोसमा ग्राम में अवतरित श्री नेमीचंद, पिता श्री बिहारीलाल और माता कटोरी बाई ने कब सोचा था उनका पुत्र सन्त शिरोमणि बन जन्म स्थान कोसमा कुल जाति वंश की कीर्ति को उज्ज्वलता से निमज्जित करेगा। वह दिन आज का सन 1915 अश्विन शुक्ला सप्तमी था जब बालक नेमीचंद ने जन्म लिया। लेकिन विधि की विडंबना थी, मा की ममता बालक को 6 माह से अधिक अपना वात्सलय न दे सकी। मा के वियोग के बाद पिता एवं भुआ दुर्गादेवी ने उनका पालन पोषण किया। बालक नेमिचंद ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा गाँव की पाठशाला में पूर्ण की उसके उपरान्त गोपालदास बरेया दिगम्बर जैन सिद्धान्त विद्यालय मोरेना से शास्त्री की परीक्षा उर्तीण की। उनकी इस सफलता का श्रेय उस भक्ति को था जो उनकी णमोकार के प्रति थी। उत्तर लिखने से पूर्व कॉपी के शीर्ष पर णमोकार मंत्र लिखा जाता। परीक्षा उर्तीण के बाद प्रधानाचार्य के रूप में पंडित श्री नेमीचंद विद्यादान करने लगे।

संस्मरण सम्मेद शिखर जी यात्रा उसका फल

एक समय की आप सिद्ध क्षेत्र सम्मेद शिखर जी की यात्रा बिना ब्रेक की साईकल पर दृढ़ इच्छा शक्ति के बल पर चल दिये और मार्ग की विभिन्न बाधाओं को झेलते हुए तीर्थ वंदना सफ़लता पूर्वक कर महान पुण्य का संचय किया। यात्रा से लौटते समय साईकल खराब हो गई, कहीं आसपास कोई दुकान दिखाई नही दी तो णमोकार का जाप करते हुए साईकल से जंगल में चले तब तक उन्हे एक दाढी वाला बाबा और साईकल की दुकान दिखी। पंडित जी के निवेदन पर बाबा ने साईकल सुधार दी पंडित जी आगे बढ़े तो उन्हे ध्यान आया पंप तो वहीं रह गया। पंडित जी वापिस लोटे तो वह चकित रह गए देखा तो वहाँ साईकल की दुकान नही थी और न बाबा केवल पंप वही था।

वैराग्य का प्रस्फुटन और दीक्षाए

आप जब जयपुर 108 चन्द्रसागर जी महाराज के दर्शन हेतु गए तो वहाँ शुद्ध जल त्याग का व्रत लिया और वही चार माह अध्ययन कार्य किया। कही संस्थाओं में कार्य करने के बाद आप कुचामन नेमिनाथ विद्यालय के प्रधानाध्यापक चुने गए वहां वीर सागर जी महाराज संघ आया तब आपने द्वितीय प्रतिमा के व्रत ग्रहण किये। और आपके व्रतों मे तीव्रतर व्रद्धि होती गई। और अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रत लेकर सातवी प्रतिमा ली। सन 2007 मे आपको आषाढ़ बदी पंचमी को बड़वानी में आचार्य श्री शान्तीसागर जी महाराज की आज्ञा से आचार्य श्री महावीर कीर्ति जी महाराज द्वारा आपको क्षुल्लक दीक्षा प्रदान की गई। वही माघ सुदी 13 संवत 2009 में धर्मपुरी पहुँचकर ऐलक दीक्षा हुई और आप नवीन नामकरण के साथ आप आप ऐलक 105 सुधर्म सागर जी महाराज नाम से संस्कारित हुए। वहीं पुनः सोनगिरी मे फागुन सुदी 13 संवत 2009 को सर्वोत्कृष्ट पद निर्ग्रंथ मुनि दीक्षा हुई और मुनि श्री 108 विमलसागर जी महाराज नामकरण किया गया। दीक्षा उपरान्त अगहन बदी 2 संवत 2018 को को टूंडला (आगरा) मे पंडित माणिकचंद जी धर्मरत्न एवं विशाल जनसमुह के बीच आपको आचार्य पद प्रदान किया गया। आप उपसर्ग विजेता रहे, आपने बंधा जी के सूखे कुँए मे शांतिधारा का जल कुँए में डलवा दिया देखा तो कुँए में जल ही जल हो गया। यही नहीं मिर्जापुर जाते समय मार्ग पर सिंह और विशालकाय अजगर का उपसर्ग हुआ।

आचार्य श्री शुभ चिन्हों से विभूषित थे, दाहिने पैर में पदमचक्र, ह्रदय में श्रीवत्स शरीर, विभिन्न तिल, कंचन वर्ण आदि उनकी महानता को सिद्ध करते है। आप अनेक उपाधियो से विभूषित थे। आपके गुणों और साधना को देख आप वात्सलय मूर्ति, करुणानिधि, स्वपरोपकारी कहा जाता था। आपने अनेक साधको को श्रमण बनाया और इस जगती का कल्याण किया। आप जैसे संत बिरले होते है, आज जो आधारशिला है।वह इन्हीं सन्तो पर टिकी है वह जीवन्त है। आपकी समाधि सन 1994 में सम्मेदशिखर जी सिद्धक्षेत्र पर हुई जहां आज भी विमल समाधि मंदिर स्थापित है मानो लगता है गुरुवर वही है किसी ने क्या खूब लिखा है मधुबन की धरती पर जब जब फूल खिलेगे, चाहोगे सम्मेदशिखर तो गुरुवर वही मिलेगें।

अभिषेक जैन लुहाडिया रामगंजमंडी

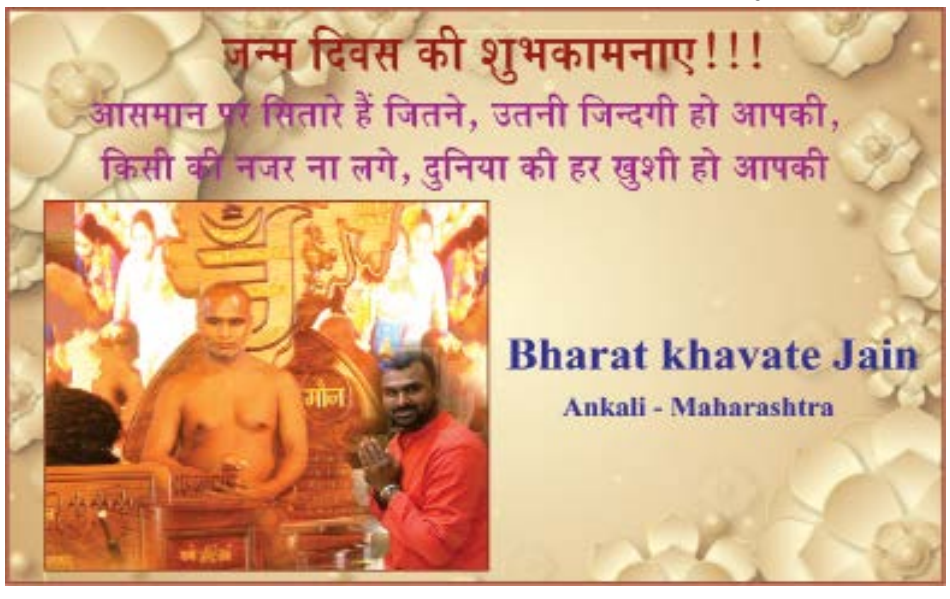

vkneh dk ge'kk Åph lkp vkj mPp fopkj j[ku pkfg,

आचार्य श्री पुलक सागर जी महाराज ने उदबोधन में कहा आदमी को हमेशा ऊंची सोच और विचार रखना चाहिए। अच्छाईयो को लेकर मनुष्य को संतुष्ट नही होना चाहिए, मन की प्रसन्नता सबसे बड़ी प्रसन्नता है। हर युवा नए सपने देखे और उन्हें साकार करे उदास होने की जरूरत नही है। हमारा देश उन्नति कर रहा है। उन्होंने कहा आज जमाना एडजस्टमेंट का है। युवा परिवार में कोई बात शेयर नही करता इसीलिए परिवार में तनाव है। वह बाहर दोस्तो में खुशी ढूढ रहा है। उन्होंने कहा समस्या आज की है और समाधान 50 साल पुराना है। बुजुर्ग आज भी अतीत में जीता है और युवा वर्त्तमान की जगह भविष्य में जीता है, वृद्घ पीढ़ी वर्तमान को स्वीकार करे और युवा पीढ़ी अतीत पर ध्यान दे तो व्यवस्था ठीक हो सकती है। ईमानदार मेहनत करने वाले निराश और चालबाज जुगाड़ु सफल दिखाई देते है। ऐसा हर काल में होता है। बुरे का फल हमेशा बुरा होता है और अच्छे का अच्छा बुराई का रिजल्ट कभी अच्छा नही आता। अच्छाई का रिजल्ट कभी बुरा नही आता। रावण हो या लादेन बुराई का अंत भी बुरा हुआ। सिद्धानों की हत्या कर सफलता लाएँगे तो निश्चित ही पतन की और ले जाएगी। सिद्धानों को ध्यान में रखकर आदमी सफल होता है तो उसे सफलता उचाईयो पर ले जाती है। बच्चो को संस्कार मां से मिलते है, महिलाओं पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी है, महिलाओं को हम विश्वविद्यालय कहते है।

आचार्य श्री ने कहा मैं एक ही संकल्प लेकर चला हुं की इंसानियत की स्थापना होनी चाहिए। आज देश में रोटी कपड़ा मकान इतनी बड़ी समस्या नही है जितनी नैतिकता और इंसानियत की समस्त है मजहबी समस्या को समझते हुए भारत को जगत गुरु बना सकते है। उन्होंने कहा जगतगुरु सोने चांदी से नही अध्यात्म से बना है। यह संतो का देश है। संसार मे सबसे अधिक महापुरुष यहां पैदा होते है। देश का विकास कैसे हो अध्यात्म और घर स्वर्ग कैसे बने इस बारे मे सोचना है। हर युवा सपने देखे और उन्हे साकार करे। 50 साल पुराने भारत और आज के भारत में बहुत कुछ अंतर है। उदास होने की जरूरत नही है, हमारा देश उन्नति कर रहा है। पहले का जो मानव था वह कम पढ़ा लिखा था। आज पढ़े लिखे ज्यादा हो रहे है, उसका कारण पहले आवश्यकता के अनुसार आविष्कार होते थे, अब आविष्कारो ने नयी आवश्यकता पैदा कर दी है। आवश्यकताओ के लिए कोई आविष्कार नही हो रहा आविष्कार इसलिए हो रहा है क्योंकि मन की इच्छा बढ़ गई है।

संकलन अभिषेक जैन लुहाडीया रामगंजमंडी